Hkfedk

हिंदी साहित्य जगत में डॉ. कृष्णमुरारी शर्मा का नाम सर्वविदित हैं उनके लेखन में एक अद्‌भुत क्षमता पायी जाती है तथा उनकी वर्णन कुशलता पाठकों से सीधा संबंध बनाने में सफल दिखायी देती है। आपके साहित्य में सामाजिक–सांस्कृतिक चेतना का समुचित उल्लेख मिलता है। डॉ. कृष्णमुरारी शर्मा ने मनुष्यता को सर्वोपरि रखकर सदियों से अर्जित मनुष्य की उदात्त भावनाओं, उपलब्धियों और मानवीय मूल्यों को रचनात्मकता प्रदान की है।

डॉ. कृष्णमुरारी शर्मा की सहानुभूति व्यक्ति, समाज एवं राष्ट्र के साथ दिखायी देती है। समाज के सुख–दुःख साहित्यकार को हर्ष और पीड़ा देते हैं। उन्होने वर्तमान दूषित राजनीति, भृष्टाचार, महँगाई, जातिवाद, आरक्षण इत्यादि सामाजिक–सांस्कृतिक विद्रूपों–विसंगतियों पर करारा प्रहार किया है। उन्होंने नीति, सदाचार, धर्म, लोक–व्यवहार, भाईचारा, मित्रता, परोपकार, सत्संग, करुणा, सेवा जैसे विषयों को अपने साहित्य में समाहित किया है।

डॉ. कृष्णमुरारी शर्मा के साहित्य में प्राचीन भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता से लेकर समकालीन यथार्थ तक का चित्रण देखने को मिलता है। इनमें डॉ. कृष्णमुरारी शर्मा के व्यापक सामाजिक, सांस्कृतिक एवं राष्ट्रीय सरोकार और प्रतिबद्धता के दर्शन होते हैं। डॉ. कृष्णमुरारी शर्मा ने कविता, गीत, गजल मुक्तक, दोहे, नाटक, समीक्षा, जीवनी, निबन्ध, कहानियाँ आदि अनेक विधाओं को अपने अभिव्यक्ति का माध्यम बनाया है। इसमें प्रमुख रूप से उनका कवि और नाटककार रूप जितना जीवन्त और प्रभावी दिखायी देता है उतना अन्य रूप नहीं।

डॉ. कृष्णमुरारी शर्मा ने समाजिक, सांस्कृतिक, आध्यात्मिक, नैतिक, धार्मिक, दार्शनिक, राजनीतिक, आर्थिक तथा राष्ट्रीय परिदृश्य को समग्रता में प्रस्तुत किया है। वे तद्युगीन साहित्यकारों में एक सामाजिक सृष्टा के रूप में लेखन शब्द को सार्थक बनाने में सफल रहे हैं। सामाजिक–सांस्कृतिक चेतना की सफल अभिव्यक्ति एवं उसका पुनरुद्धार, डॉ. कृष्णमुरारी शर्मा ने अपने साहित्य में सफलता पूर्वक किया है।

डॉ. कृष्णमुरारी शर्मा के प्रकाशित काव्य संग्रह– 'किरण', 'भू और ख के बीच सब' (दोहा संग्रह 2003), 'त्रिगन्धा' (मुक्तक संग्रह), 'पीयूषिका' (दोहा संग्रह), 'जन्मजात विषपायी ठहरे' (2012) एवं 'शेष–अशेष' (अप्रकाशित) तथा नाटक– 'आदमी की तलाश' (एकांकी संग्रह 2003), 'दरोगा साहब' (2005), 'नेताजी' (2007), 'आज का श्रवण कुमार' (2009), 'वीरांगना रानी दुर्गावती', (2013), एवं 'प्रो. अच्छेलाल' (अप्रकाशित) तथा समीक्षा, जीवनी, निबन्ध संग्रह और कहानियाँ आदि में सामाजिक सांस्कृतिक चेतना को भली भाँति देखा जा सकता है।

शोध प्रबन्ध में डॉ. कृष्णमुरारी शर्मा के साहित्य में सामाजिक–सांस्कृतिक चेतना पर विस्तार से विचार और विश्लेषण किया गया है। मेरी जानकारी के अनुसार अब तक डॉ. कृष्णमुरारी शर्मा के साहित्य के कोई शोध कार्य नहीं हुआ है। विषय नया है तथा पूरी तरह मौलिक है, इसलिए डॉ. कृष्णमुरारी शर्मा के साहित्य पर शोध कार्य करने का निश्चय किया।

अध्ययन की सुविधा के लिए इस शोध प्रबन्ध को पाँच अध्यायों में विभक्त किया गया है।

iFke v/;k;& ''सामाजिक–सांस्कृतिक चेतना से अभिप्राय/ अर्थ'' में सामाजिक, सांस्कृतिक चेतना का अर्थ स्पष्ट करने का

प्रयास किया गया है तथा संस्कृति समाज, धर्म, दर्शन और साहित्य पर भी विचार किया गया है तथा युगीन संक्रमण, चुनौतियाँ एवं समाधान भी बताए गये हैं।

f}rh; v/;k;& ''डॉ. कृष्णमुरारी शर्मा – व्यक्तित्व एवं कृतित्व'' में डॉ. कृष्णमुरारी शर्मा के व्यक्तित्व एवं कृतित्व के अन्तर्गत उनके जन्म, शिक्षा, उच्च शिक्षा, पारिवारिक पृष्ठभूमि, विद्यार्थी जीवन, मित्र, गुरुजन, एवं साहित्य से संबंध भी बताया गया है तथा पुरस्कार, सम्मान एवं उपाधियों की चर्चा के साथ–साथ कृतित्व के बारे में भी विस्तार से चर्चा की गयी है।

r`rh; v/;k;& ''डॉ कृष्णमुरारी शर्मा के काव्य में सामाजिक–सांस्कृतिक चेतना'' के अन्तर्गत डॉ. कृष्णमुरारी शर्मा की काव्य कृतियों में सामाजिक–सांस्कृतिक चेतना को स्पष्ट किया गया है।

prqFkZ v/;k;& ''डॉ. कृष्णमुरारी शर्मा के गद्य साहित्य में सामाजिक–सांस्कृतिक चेतना की विस्तृत चर्चा हुई है।

iape v/;k;& ''उपसंहार एवं निष्कर्ष'' के रूप में प्रस्तुत किया गया है। समस्त अध्यायों के निष्कर्षात्मक विवरण द्वारा लघु एवं सीमित रूप में प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है।

यह कार्य मैंने डॉ. मीना श्रीवास्तव, प्राचार्य शासकीय महाविद्यालय, भितरवार (ग्वालियर) के निर्देशन में किया है। मैं उनके स्नेह एवं अमूल्य सहयोग को 'आभार' शब्द की संकीर्णता में बाँध पाने का दुःसाहस नहीं कर पा रहा हूँ।

दिनांक .... शोधार्थी

/keZsUnz dqekj 'kekZ